प्रथम - अध्याय

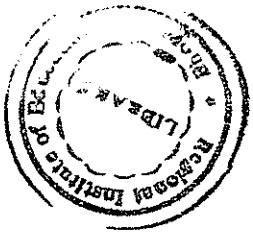

प्रथम अध्याय

1.1 प्रस्तावना

मूल्यांकन का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा को शिक्षण अधिगम की व्यवस्थाओं में अभिन्न स्थान देने के पीछे यह मत अथवा दर्शन अधिक हावी रहा है कि इसे एक युक्ति एवं उपकरण के रूप में उपकल्पित करते हुए शिक्षण अधिगम की संक्रियाओं को जीवन्त सार्थक गुणवत्ता पूर्ण एवं प्रभावी बनाया जाए। यह उभरते वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी एक अति महत्वपूर्ण युक्ति का स्थान ग्रहण कर चुकी है। यह छात्र के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के सम्बन्ध में मूल्य का अंकन करता है। इसका प्रवेश मापन की अनेक कमियों को दूर करने के लिए किया गया है।

1.2 सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा

सतत शिक्षा एवं व्यापक शिक्षा मूल्यांकन एक तरह की अभीवृति हैं यह शैक्षिक एवं गैर शैक्षिक क्षेत्रों को कबर करके उसका मूल्यांकन करने का कार्य करता है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन योजना छात्रों के एक स्कूल आधारित मूल्यांकन करके छात्रों के विकास के सभी पहलुओं को शामिल करता है। सतत एवं व्यापक शिक्षा को नियमित निरंतर आकलन है जो इकाई परीक्षण विद्यायर्थियों की शिक्षा प्रणाली में सुधारात्मक उपाय लागू करके दुबारा परीक्षण और उनके आत्म अवधारणा के मूल्यांकन के लिए शिक्षक और छात्रों को क्रियात्मक का गुण है। व्यापक से दूसरी प्रयास पर पूरा करने के लिए शैक्षिक और गैर शैक्षिक दोनों क्षेत्रों के द्वारा छात्रों के विकास के लिए कार्य करता है। सतत शिक्षा मूल्यांकन एक प्रतिक्रिया है जिसमें विद्यालय एवं विद्यार्थियों के निरन्तर नियमित विकास का मूल्यांकन करने की एक प्रतिक्रिया है।

1.3 विभिन्न परिप्रेक्ष्य में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन

भारत में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

डॉ राधा कृष्णन की अध्यक्षता में गठित विश्वविद्यालयां शिक्षा आयोग 1948 डॉ मुदालियर की संरक्षता में गठित माध्यमिक शिक्षा आयोग 1953 में प्रचलित परीक्षाओं की अविश्वसनयता एवं उनके परिणामों पर तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त की थी किन्तु इनमें सुधार लाने हेतु स्पष्ट एवं मुखर संस्तुति की कोठारी आयोग (1964–66) के माध्यम से ही बल प्राप्त हो सका। इस सम्बन्ध में कोठारी आयोग की मुख्य संस्तुति इस प्रकार थी।

प्रत्येक विद्यालय द्वारा अपने ही स्तर पर किया जाने वाला आन्तरिक आंकलन या मूल्यांकन बहुत अर्थपूर्ण होता है तथा इस पर अधिकाधिक महत्व दिया जाना चाहिए। यह मूल्यांकन व्यापक रूप से होना चाहिए जिसमें विद्यार्थियों के विकास के उन सभी पक्षों का आंकलन हो जो बाह्य परीक्षाओं द्वारा मापित होते है तथा व्यक्तित्व के उन विशेष को रूचियों एवं अभिवृत्तियों का भी जो उनके द्वारा नहीं होता। विद्यालय के सम्पूर्ण शैक्षिक कार्यक्रमों के तहत आन्तिरिक मूल्यांकन समविष्ट होना चाहिए तथा इसका उपयोग शिक्षा एवं शिक्षण में सुधार के लिए होना चाहिऐ न कि विद्यार्थियों के निष्पति स्तर को प्रमाणित करने हेतु यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि आन्तरिक मूल्यांकन के सभी बिन्दुओं पर परिणात्मक ढंग से आंकन करने की आवश्यकता नहीं है। इनमें से कुछ बिन्दुओं को विवरणात्मक ढंग से मूल्यांकित करना चाहिए। ये परिणाम पृथक पृथक दर्शाए तथा इन्हें कृत्रिम रूप में एक सम्पूर्णाक के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास नहीं है।

3 मार्च 1986 ई. को तात्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री वी.वी. नरसिन्हाराय ने एक विशेष समिति की बैठक आहूत की जिससे राज्यों के शिक्षा मंत्री परीक्षा सुधार से सम्बन्धित विशेषज्ञ शामिल थे इस समिति ने अधोलिखित संस्तुति की।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की योजना होनी चाहिए जिसे अत्यन्त सुविधा वंचित संस्थाऐं भी लागू कर सके इसके अन्तर्गत शैक्षणिक निष्पति विद्यालयीन मंत्रों की अवधि से जुड़ी व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुणों, रूचियों अभिवृत्तियों तथा पाठयक्रम सहमति क्रियाओं में दक्षता के आकलन को शामिल किया जाए सभी विद्यार्थियों की शैक्षणिक निष्पतियों से भिन्न व्यक्तित्व के कतिपय पक्षों का भी आकलन अवश्मेत होना चाहिए।

कोठारी आयोग - 1964-66 के आधार पर मूल्याकन

मूल्यांकन का क्रमिक प्रक्रिया है जो कि संपूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण अंग है और जो शिक्षा के उद्देश्यों से घनिष्ठ रूप से संबंधित है।

आयोग ने प्रचलित पद्धति में सुधार करने के लिए निम्न लिखित विचार व्यक्त किये है –

1. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को विश्वविद्यालयों की सहायता से केन्द्रीय परीक्षा सुधार यूनिट की स्थापना करनी चाहिए।
2. विश्वविद्यालय के शिक्षकों की सेमिनारों वर्कशर्प एवं विचार सम्मेलनों का आयोजन करके मूल्यांकन की नवीन उन्नत विधियों की जानकारी प्रदान की जानी चाहिए।
3. शिक्षण विश्वविद्यालयों में बाहय परीक्षा प्रणाली को समाप्त स्वयं अध्यापकों

द्वारा आंतरिक तथा क्रमिक मूल्यांकन की प्रणाली को लागू किया जाना चाहिए।

राधाकृष्णन कमीशन के अनुसार मूल्यांकन

देश में प्रचलित मूल्यांकन व्यवस्था की आयोग ने तीव्र आलोचना की विश्वविद्यालय शिक्षा पर परीक्षा प्रभुत्व छाया है। आयोग ने उल्लेख किया यदि हम विश्वविद्यालय की शिक्षा में केवल एक विषय में सुधार का सुझाव दे तो वे परीक्षाओं में संबंधित होने चाहिये यह सत्य है कि परीक्षाओं की प्रति भारत तथा विश्व भर में प्रबल असंतोष है परन्तु हम पूर्ण रूप से दृष्टिकोण के पक्ष में नहीं है। यदि परीक्षाओं की उचित प्रकार से व्यवस्था की जाये तो वे शिक्षा व्यवस्था के प्रमुख स्थान गृहण कर सकती है। परीक्षा प्रणाली में सुधार करने के लिए आयोग ने निम्न सुझाव प्रस्तुत किये –

1. प्रत्येक विश्वविद्यालय में एक परीक्षक बोर्ड की नियुक्ति की जाय।
2. छात्रों के कक्षा कार्यो को भी महत्व प्रदान किया जाय 11/3 अंकों को कक्षा के लिए ही सुरक्षित रखा जाये।
3. स्नातकोत्तर तथा व्यावसायिक परीक्षाओं में लिखित परिणामों के साथ–साथ मौखिक परीक्षाओं को भी सम्मिलित किया जाये।
4. परीक्षाओं का चुनाव योग्यता के आधार पर अत्यन्त सावधानी के साथ किया जाय। किसी अध्यापक के 3 वर्ष से अधिक समय तक परीक्षक न बनाया जाय।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन जिसमें अनुदेशन की पूरी अवधि तक प्रदत शिक्षा के शैक्षणिक एवं शैक्षणिकेवर दोनों ही पक्ष शामिल है को क्रियान्वित करना। इस अवधारणा को राज्य स्तरों पर परीक्षा निकायों बोर्ड एवं विश्वविद्यालय के माध्यम से निर्धारित प्रपत्रों के अनुरूप लागू करने के लिए निर्देशित किया गया। कहने की आवश्यकता नहीं कि मूल्यांकन का यह स्वरूप औपचारिक रूप में स्वीकृत हो जाने पर भी अभी तक जमीनों तौर पर अधिकांश संस्थाओं की कार्य पद्धति में स्थान नहीं पा सका है जिससे हमारी शिक्षण व्यवस्थाओं की गुणवत्ता कुप्रभावित हुई है।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का महत्व

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का महत्व एवं प्रकार्यओं को सचमुच गतिशील एवं

सार्थक बनाए रखने की दृष्टि से मूल्यांकन के अन्तर्गत शैक्षिक एवं गैर शैक्षिक दोनों ही प्रकार की निष्पत्तियों पर ध्यान देना आवश्यक है यदि विद्यार्थी किसी क्षेत्र में न्यूनतम प्रदर्शित करता है तो उसे निदानात्मक एवं सुधारात्मक युक्तियों एवं उपायों की सहायता से अपेक्षित स्तर तक पहुचाना एक अच्छी व्यवस्था के उद्देश्यों में शामिल होता है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन विद्यार्थियों की शैक्षणिक एवं गैर शैक्षिक क्षेत्रों में उपलब्धियों एवं उनसे सम्बन्धित प्रगति स्तर की नियमित रूप में आकलित करने में सहायक होता है यह विद्यार्थियों की कमियों उसकी सकारात्मक क्षमताओं तथा उनकी अधिगम आवश्यकताओं को जानने समझने में शिक्षक की विशेष मदद करता है। जिससे वह शिक्षण की इकाई में उपेक्षित सुधारात्मक युक्तियों का सही रूप में प्रावधान कर लेता है।

शैक्षिक मापन और मूल्यांकन का सामान्य परिचय

बच्चे अपने आस–पास के वातावरण तथा अपने नित्य के क्रिया कलापों से कुछ न कुछ सीखते है उनका सीखना बिना किसी बन्धन के सहज रूप से चलता रहता है। परन्तु स्कूलों में बच्चों को सिखाने की स्थिति कुछ अलग हो जाती है क्योंकि यहां हम उनके लिए कुछ पाठयक्रम, तरीके, नियम, समय सीमा तय कर देते है।

सी.बी.एस.ई. विद्यालयों में शैक्षिक एवं गैर शैक्षिक प्रवित्तियां –

छात्रों की साप्ताहिक प्रगति को जानने हेतु अध्यापक साप्ताहिक मूल्यांकन का सहारा लेता है। प्रायः छात्र ड्रिल विधि के आधार पर कविता, गीत, पहाडे, गिनती आदि सीखते है अध्यापक द्वारा सप्ताह भर के कार्यो का निरीक्षण, पर्यवेक्षण तथा मूल्यांकन किया जाता है। जिसके आधार पर शिक्षक को आगे आने वाले सप्ताह के कार्यो को सम्पन्न कराने का मौका मिल जाता है एवं वे पश्य पोषण भी प्राप्त कर लेते है जिसके कारण छात्रों को उपचारात्मक शिक्षण प्रदान करके उनकी बुनियादी कमजोरियों का निराकरण कर लिया जाता है।

पिछले एक वर्ष में भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। ऐसा एक परिवर्तन माध्यमिक शिक्षा के केन्द्रीय बोर्ड द्वारा सी.वी.एस.ई. विद्यालयों में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली को लागू किया गया है। सतत शिक्षा मूल्यांकन छात्रों के तनाव को कम करने में मदद करता है। शिक्षा के नियमित समय अंतराल में छोटे भागों पर विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से सहयोग देकर सीखने की प्रक्रिया में पहचानने में मदद करता है।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली छात्र विकास की प्रणाली मानी जाती है इसमें

परीक्षा सत्र को दो भागों में बाटा गया है। इसमें प्रथम सत्र में छः माह में समाप्त होता है और दूसरा सत्र भी छः माह में समाप्त होता है दोनों सत्रों में ईकाई परीक्षण लिया जाता है।

शैक्षिक क्षेत्र–

शैक्षिक क्षेत्र के मूल्यांकन का होता है। यहाँ शैक्षिक क्षेत्रों से संबंधित मूल्यांकन होता है इसमें दो प्रारम्भिक और एक सवमेटिव मूल्यांकन करना होता है मूल्यांकन ग्रेड में संकेत किया जाता है इसमें 9 बिन्दु अनुयतांक मापनी का प्रयोग किया जाता है कुल मिलाकर दो पक्षे पर प्रारम्भिक आकलन में एफ ऐ 1, एफ ऐ 2, ऐफ ऐ 3, एफ. ऐ 4, और समेकित के समस्त ग्रेड मूल्यांकन सेमिस्त 1 + सेमिस्टर 2 दिया जाता है।

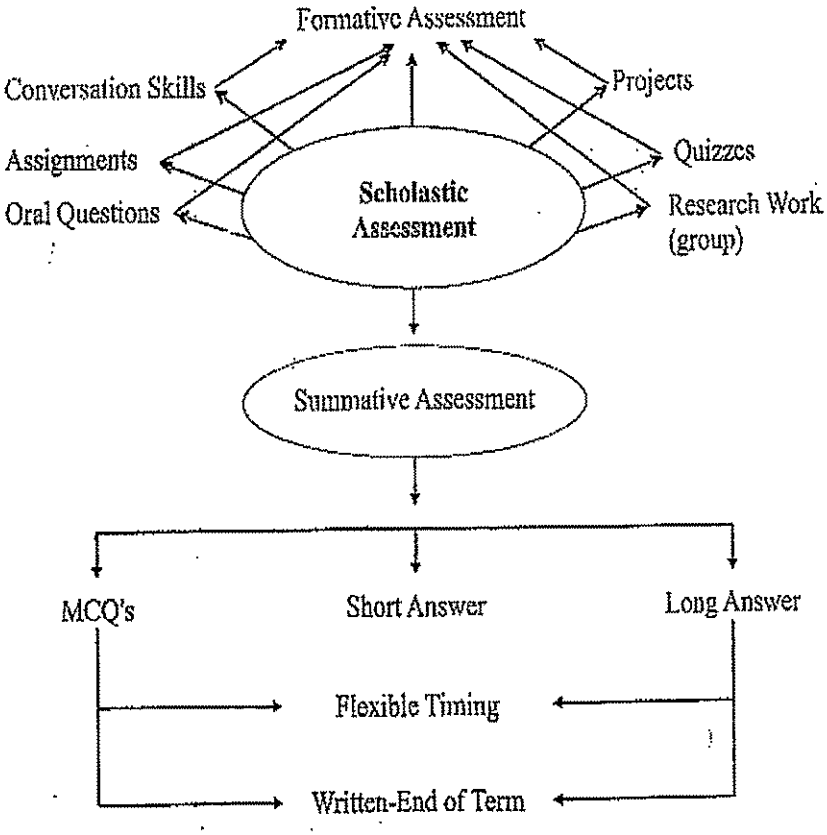

गैर शैक्षिक–

गैर शैक्षिक क्षेत्रों के मूल्यांकन का होता है। इसमें छात्रों की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मूल्यांकन किया जाता है तथा इसमें ग्रेडिंग 5 बिन्दु अनुमतांक मापनी का प्रयोग किया जाता है इसमें निम्न को शामिल किया जाता है। स्व. जागरूकता, समस्या हल, निर्णय, गंभीर सोच, रचनात्मक सोच, पारस्परिक रिश्ते

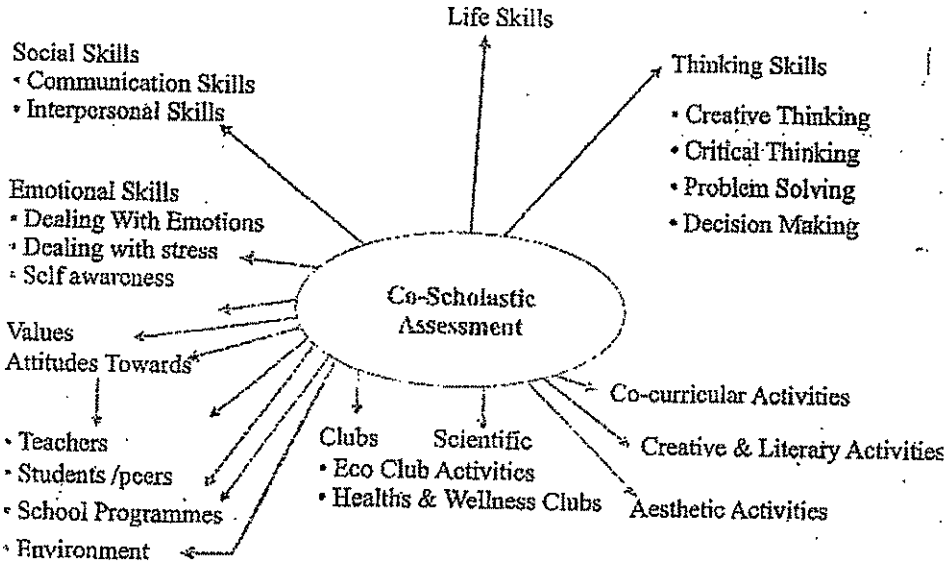

सतत (निरंतर) मूल्यांकन से तात्पर्य –

सतत मूल्यांकन का तात्पर्य उन परीक्षण से है जिससे छात्र के अध्ययन तथा उपलब्धियों का प्रतिमाह लेखा जोखा लिया जाता है। सतत मूल्यांकन पद्धति में आमतौर पर सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को दस इकाइयों में विभक्त कर दिया जाता है। प्रत्येक माह एक इकाई का अध्यापन कराने के पश्चात स्वाभाविक रूप से परीक्षण किया जाता है जिसका व्यवस्थित अभिलेख रखा जाता है। प्राथमिक तथा पूर्व माध्यमिक कक्षाओं में सतत मूल्यांकन पद्धति कहीं–कहीं प्रचलित है पर यह उस रूप में नहीं है जैसा कि सतत मूल्यांकन के मौलिक स्वरूप में होना चाहिए प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की प्रगति का दैनिक लेखा जोखा तैयार करने हेतु अध्यापकों द्वारा उनका दैनिक मूल्यांकन किया जाता है। प्राथमिक कक्षाओं के छात्रों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है जिसका शिक्षक ध्यान में रखते हुए आगामी अधिगम क्रियाओं को सम्पन्न करता है।

व्यापक मूल्यांकन

दक्षता आधारित मूल्यांकन प्रतिदिन कक्षा में शिक्षण के अन्तर्गत छात्रों में दक्षता सिखाने के बाद किया जाता है पर छात्रों की दक्षता के अलावा उनमें संज्ञानात्मक पक्ष भाव पक्ष एवं क्रियात्मक पक्ष भी शामिल होते है अतः छात्रों के चहुमुंखी विकास के लिए व्यापक मूल्यांकन की जरूरत होती है पाठयक्रम संबंधी क्रियाऐं इसके अन्तर्गत बाद विवाद, खेलकूद, भाषण नाटक, तैरना, स्काउटिंग एवं कार्यानुभव आदि क्रियाऐं शामिल है जिनका मूल्यांकन बहुत जरूरी होता है अभीतृप्ति – इसके अन्तर्गत समाजवाद, धर्म निपेक्षता, राष्ट्रीय, भावात्मकता एकता शामिल है।

इसके अन्तर्गत समय नियमबद्धता, नैतिकता, उत्तरदायित्व की भावना, स्वच्छता एव सहयोग, सत्यनिष्ठता, नियमितता, समाज सेवा स्वास्थ्य विवरण, लम्बाई, भार, स्वास्थ, शारीरिक विकास आदि

छात्र की अभिरूचियों – इसके अन्तर्गत सहित, संगीत कला एवं प्रकृति दर्शन शामिल है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा 2005 के अनुसार आकलन और मूल्यांकन का अर्थ

भारतीय शिक्षा में मूल्यांकन शब्द परीक्षा तनाव और दुश्चिता से जुड़ा हुआ है। पाठयचर्या की परिभाषा और नवीनीकरण के सभी प्रयास विफल हो जाते है अगर वे स्कूली शिक्षा प्रणाली में जड़े जगाए मूल्यांकन और परीक्षा तंत्र के अवरोध से नहीं जूझ सकते हमें परीक्षा के उन दुष्प्रभावों की चिंता है जो सीखने सीखाने की प्रक्रिया को सार्थक बनाने और बच्चों के लिए आनंदायों बनाने के प्रयासों पर पड़ते है। वर्तमान में बोर्ड की परीक्षाऐं स्कूली वातावरण की नकारात्मक रूप में प्रभावित करती है एक अच्छी मूल्यांकन और परीक्षा पद्धति सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग बन सकती है। जिसमें शिक्षार्थी और शिक्षा तंत्र दोनों को ही विवेचनात्मक और आलोचनात्मक प्रतिपुष्टि से फायदा हो सकता है यह भाग मूल्यांकन और आकलन को सबंधित करते हुए शुरू होता है।

आकलन एवं मूल्याकन उद्देश्य

शिक्षा का सरोकर एक सार्थक व उत्पादक जीवन की तैयारी से होता है और मूल्यांकन आलोचनात्मक प्रतिपुष्टि देने का तरीका होना चाहिए। यह प्रतिपुष्टि इस बात की होती है कि हम ऐसी शिक्षा लागू करने में किस हद तक सफलता प्राप्त कर पाएं इस परिप्रेक्ष्य से देखें तो वर्तमान में चल रही मूल्यांकन की प्रक्रियाएं जो केवल कुछ ही योग्यताओं को मापती और आकलित करती है। बिल्कुल ही अपर्याप्त है।

और शिक्षा के उददेश्यों की ओर प्रगति की संपूर्ण तस्वीर नहीं खीचती है लेकिन मूल्यांकन का यह सीमित प्रायोजन भी अकादमिक और शैक्षिक विकास पर प्रतिपुष्टि देने वाला तभी बन सकता है जब शिक्षक पढ़ाने से पहले ही न केवल आकलन के तरीकों की तैयारी करें बल्कि मूल्यांकन के मानकों और उसके लिए प्रयुक्त होने वाले औजारों की भी तैयारी करें। विद्यार्थियों की उपलब्धि की गुणवत्ता की जॉच के अलावा एक अध्यापक को विभिन्न विषयों में उनकी उपलब्धि की जानकारी इकटठा कर, उसका विश्लेषण कर और उसकी व्याख्या करनी होगी तभी अध्यापक विभिन्न क्षेत्रों में

विद्यार्थियों के अधिगम की सीमा की एक समझ बना पाएंगे। आकलन का प्रायोजन निश्चय ही सीखने सिखाने की प्रक्रियाओं एवं सामग्री का सुधार करना है और उन लक्ष्यों पर पुनर्विचार करना है जो स्कूल के विभिन्न चरणों के लिये तय किया गया है।

शिक्षार्थियों का आकलन –

बच्चे की अधिगम की गुणवत्ता और विस्तार पर लिखी गई एक सार्थक रपट को सामवेशी होना चाहिए हमें एक ऐसी पाठ्यचर्चा की आवश्यकता है। जिसमें सृजनात्मकता नवप्रवर्तकता और बालक का संपूर्ण विकास हो तो ऐसे में पाठय पुस्तक आधारित अधिगम और रटे हुए तथ्यों को जॉचने वाले परीक्षण दोनों ही बेकार है। हमें मूल्यांकन और प्रतिपुष्टि को पुनः पारिभाषित करने और उनके नए मानक ढॅढ़ने की जरूरत है। विशिष्ट विषयों में शिक्षार्थियों की उपलब्धि का बड़े आराम से परीक्षण हो जाता है। उसके अलावा हमें आकलन में सीखने के प्रति अभिवृत्तियों रूचि और स्वयं सीखने की क्षमता को भी शामिल करना होगा।

आकलन की रूपरेखा और उसका संचालन –

आकलन और परीक्षाओं को विश्वसनीय होना चाहिए एवं अधिगम को मापने के वैद्य तरीकों पर आधारित होना चाहिए। जब तक परीक्षाऐं बच्चों की पाठयपुस्तकीय ज्ञान को याद करने की क्षमताओं का परीक्षण करती रहेगी तब तक पाठयचर्या को सीखने की तरफ मोड़ने के सभी प्रयास विफल होते रहेंगे पहला बिंदु यह है कि ज्ञान आधारित विषय क्षेत्रों में परीक्षाऐं ये समझ पाए कि बच्चों ने क्या सीखा और उस ज्ञान को समस्या सुलझाने और व्यवहार में लाने की उनकी क्षमता को जॉच पाएं इसके अलावा, परीक्षाएं यह भी जॉचने में सक्षम होना चाहिए कि विद्यार्थियों की सोचने की प्रक्रियाऐं कैसी है तथा यह पता लगा पाएं कि क्या शिक्षार्थी ने यह सीखा कि जानकारी कहां मिलती है उस जानकारी का इस्तेमाल कैसे करते है। आकलन के लिए जो प्रश्न निर्धारित किए जाते है उन्हें किताब में दी गई जानकारी से आगे बढ़ाने की जरूरत है कितनी ही बार बच्चों का अधिगमन इसलिए बहुत ही सीमित रह जाता है क्योंकि शिक्षक उन उत्तरों को स्वीकार नहीं करते जो कुंजियों में दिए गए उत्तरों से भिन्न होते है। ऐसे प्रश्नों को भी इस्तेमाल करना चाहिए जिनका कोई एक उत्तर नही होता और जो बच्चों के सामने चुनौती पेश करते है अच्छे प्रश्न और परीक्षा पत्र बनाना भी एक कला है और शिक्षकों को ऐसे प्रश्न बनाने में अधिक बल दिया जाना चाहिए शिक्षकों की अच्छे प्रश्न बनाने की क्षमता और रूचि को बढ़ता देने के लिए जिला या राज्य के स्तर पर प्रतियोगिताएं की जा सकती है सारे प्रश्न पत्र कठनाई की ऐसी रूपरेखा लिए हुए होने चाहिए कि सभी परचे सफलता के स्तर को अनुभव कर पाऐं और उत्तर देने एवं समस्या सुलझाने की

क्षमता में आत्मविश्वास विकसित कर पाऐं खुली पुस्तक की क्षमता में आत्मविश्वास विकसित कर पाऐं खुली पुस्तक परीक्षा पत्र बनाना भी एक चुनौति है जिसे स्कूल के प्रत्येक स्तर के पाठयचर्या प्रयासों में शामिल करना चाहिए लेकिन ऐसा करने के लिए अध्यापकों और प्रश्न पत्र बनाने वालों से यह अपेक्षा होगी कि वे व्याख्या करने और अधिगम के व्यावहारीय पहलू पर ज्यादा जोर दे न कि किताब में दिए गए तर्क और तथ्यों पर इस तरह के कई सफल उदाहरण हमारे पास मौजूद है कि ऐसी परीक्षाएं बड़े स्तर पर आयोजित की जा सकती है और शिक्षक खुद ऐसी परीक्षाओं के परिणामों नियमन कर सकते है। और उन पर ऐसे नियमन के लिए भरोसा किया जा सकता है इसलिए परियाजनाओं और प्रयोगशाला के काम के आकलन को भी और विश्वसनीय और पुख्ता बनाया जा सकता है। यह जरूरी है कि जॉचे गए उत्तर वापिस मिलने पर बच्चे अपने उत्तरो को दोबारा लिखे और शिक्षक उन पर पुनर्विचार करे ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि बच्चे ने कुछ सीखा और ऐसी कठिन परीक्षा देने से उन्हें कोई लाभ हुआ।

1.4 लघु शोध की आवश्यकता एवं महत्व

कन्द्रीय माध्यमिक बोर्ड शिक्षा संस्थान में पिछले एक वर्ष में कुछ विशेष परिवर्तन आया है ऐसा एक परिवर्तन मूल्यांकन की प्रतिक्रियां में आया है सतत एवं सर्वग्राही व्यापक मूल्यांकन को केन्द्रीय शिक्षा संस्थाओं में लागू किया गया है इसके अंदर छात्रों की शैक्षिक प्रवृत्तियों एवं गैर शैक्षिक प्रवृत्तियों आदि सभी को मूल्यांकन किया जाता है मैंने यह अध्ययन विद्यार्थियों की सतत शिक्षा मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति क्या है इसका पता लगाने के लिऐ करना आवश्यक समझा। इस अध्ययन के माध्यम से हमें विद्यार्थियों के मानसिक तनाव के बारे में जिससे हमें इस मूल्यांकन पद्धति के महत्व वा आवश्यकता का पता लगाने है इस अध्ययन के माध्यम से हमें वर्तमान में सतत शिक्षा मूल्यांकन के संबंध में शिक्षकों के विचारों के बारे में जानकारी मिली वह सतत एवं व्यापक शिक्षा मूल्यांकन से कितने सहमत है कक्षा 6वीं के विद्यार्थियों पर इस मूल्यांकन का क्या प्रभाव पड़ा इसका अध्ययन करने के लिय इस अध्ययन की आवश्यकता थी।

महत्व –

सतत शिक्षा मूल्यांकन के द्वारा विद्यार्थियों के तनाव को कम करने में मदद मिलती है।

सतत शिक्षा मूल्यांकन विद्यार्थियों के मानसिक तनाव को कम करके सामग्री के छोटे भागों पर नियमित समय अंतराल पर छात्रों की सीखने की प्रगति को पहचान कराता है।

शिक्षार्थियों को सीखने की प्रक्रियां को बढ़ाने में सक्रिय रूप से सहयोग देता है।

विद्यार्थियों को सहपपाठयचर्या क्षेत्रों में अच्छे प्रदर्शन हेतु विशिष्ट क्षमताओं को बढ़ाता है।

सतत एवं व्यापक शिक्षा मूल्यांकन परीक्षण सुधार प्रतिक्रिया है।

यह एक प्रणाली है शिक्षकों के द्वारा विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रतिक्रियाओं एवं गैर शैक्षिक प्रतिक्रियाओं के विकास में सहाता करता है।

इस प्रणाली में छात्रों के व्यक्तितव के सभी पहलुओं का मूल्यांकन करता है।

1.5 समस्या कथन

भोपाल जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड संस्थान विद्यालय में चलाये जा रहे सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का अध्ययन

1.6 शोध के उद्देश्य

1. केन्द्रीय माध्यमिक बोर्ड में चलाये जा रहे सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति शिक्षकों के विचारों का अध्ययन
2. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति महिला एवं पुरूष शिक्षकों की अभीवृति का तुलनात्मक अध्ययन
3. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति छात्रों एव छात्राओं की अभीवृति का तुलनात्मक अध्ययन
4. विद्यार्थियों की आत्म अवधारणा एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन
5. विद्यार्थियों की मानसिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसबंध का अध्ययन

1.7 शोध के चर –

शोध में प्रयुक्त चर का शैक्षिक शोध में काफी महत्वपूर्ण स्थान है चरों से हमारा तात्पर्य है कि जिसका नाम परिवर्तन होता है।

चर अभिवृति, मानसिक तनाव
आत्म अवधारणा, शैक्षिक उपलब्धि
सी.सी.ई. पर शिक्षकों के विचार

शोध परिकल्पनाऐं -

सतत एवं व्यापक शिक्षा मूल्यांकन के प्रति छात्र एवं छात्राओं की अभीवृति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सतत एवं व्यापक शिक्षा मूल्यांकन के प्रति पुरूष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों की अभिवृति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

विद्यार्थियों की आत्म अवधारणा एवं शैक्षिक उपलब्धियों के संबंध के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों एवं मानसिक तनाव के मध्य संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध परिसीमाऐं -

यह अध्ययन भोपाल जिले के केन्द्रीय माध्यमिक बोर्ड शिक्षा संस्थाओं में किया गया जिसमें हमने भोपाल जिले के सीबी.एस.ई. के अंतर्गत सतत एवं व्यापक मूल्याकन का अध्ययन किया इसमें हमने प्राथमिक स्तर के कक्षा 6वी के विद्यार्थियों पर उपकरणों का प्रयोग किया जिसमें हमने

1. केन्द्रीय विद्यालय स्थान बैरागढ़
2. नवोदय विद्यालय स्थान राती बढ़
3. सेन्ट जोर्ज रेसीडेन्टल स्कूल करोद

इन तीनों विद्यालयों के कक्षा 6 के विद्यार्थियों पर परीक्षण किया गया।